हिन्दी 347 Code No 20

THE DISTRICT EDUCATIONAL OFFICE VATAKARA

परंपरा और आधुनिकता के बीच का टकराहट

परंपरा एक वस्तुता है, जो युग के अनुसार परिवर्तनो लाते है। सभी देशों अपनी सांस्कृतिक परिवर्तनों, परंपरा एवं चैतन्य को अपने हृदय तक जोड़ती है। पूर्वजों के कालों से ~~लोगों~~ लोग अपनी सांस्कृतिक एकता के प्रागति के लिए अनेक संभावनाएँ किया गया है। जिसके कारण ही वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सभी देशों आगे बढ़ चुकी हूँ। आज की संसार के व्यवस्थापन में परंपरा एवं संस्कार ने महत्वपूर्ण भूमिका लिया है।

संसार के अनेक देशों में से आकार में छोटे पर वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक आविषकारों के क्षेत्र में प्रमुख स्थान लेनेवाली देश है भारत। जिसमें तरह-तरह के वस्त्रधारण और आकार में विभिन्न दिखाई देनेवाली लोग बसते है। इस देश के सबसे बड़ी विशेषता है कि जाति, संस्कार, आपसी विश्वास, कलारुपों, वस्त्रधारण आदि के एक सगुण संगम है। ~~जिसको~~ जिस बात को हम एकता कहलाता है। जिस देश अपने संस्कार और पुरानी परंपरा को अपने आप

Code No : 20

THE DISTRICT EDUCATIONAL OFFICE VATAKARA

तक ही नही पूरे संसार तक प्रचार किया है। अपने परंपरा और सास्कृतिक एकता को ही अपने आप की स्वाभिमान समझते है। सही दृष्टिकोण से देख लूँ तो यह सौ प्रतिशत सही है, क्योंकि एक व्यक्ति की जन्म देनेवाली भूमि उस व्यक्ति के सोच मे स्वर्गतुल्य है।

सिर्फ भारत ही नही सभी देशों का स्मरणीय क्षेत्र है अपनी परंपरा का सुरक्षितत्व। लेकिन हमे याद मे रखनेवाली कई बाते है। भारत की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए कई लोग अपने जान तक बलिदान करके अमर हुआ है। उस देश की वीर भूमि में ही हम रहते है। लेकिन उस वीर गाथाओं को लोग महत्वपूर्ण स्थान नही देते है। जिसका कारण है अपने देश के संस्कार उनको अनजान है। हरिश्चंन्द्र जैसे धार्मिक और आदर शासकों का रणभूमि है।

भारत के परंपरा को आज भी ~~लोग~~ लोग हृदय तक जोड़ती है। जिसका उत्तम दृष्टांत है हमारी स्लोगन - "अतिति देवो भव:"।

Code No 20

भारतीय वंशजों अपने अतिथियों को देवों का स्थान दिया है। आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र में भारतीय संस्कार का स्थान अवर्णनीय और अद्वितीय है। एक और सच्ची उदाहरण है जो हमारी चरित्र लेखन से मिलते है। हमारी राजपुत शासकों अपनों के ~~और~~ ओर से अधिक अपने अतिथियों का सच्चा आदर करते है। अपने अतिथियों को अच्छी तरह सत्कार और मनोरंजन करने में सदा समय व्यस्त थे। हमारी राजपुत शासक राना साहब अपनी अतिति बनकर आई शत्रु अलाऊदीन खिलजी को कई बार मार सकते थे। लेकिन वह अपने आतिथ्य मर्यादा को मजबूत करना चाहते थे। गाँधी जी की ~~अहिंसा~~ अहिंसा तत्व पर निर्भर है हमारी चैतन्य और परंपरा। हम लोगो से व्यवहार अपने हथियार से नही बल्कि शांतिपूर्वक वाक्यों से करते है। जिसका फल है हमारी ~~देश~~ देश की शांती और खुशी। इसी बात ही हमारी देश को रहने के

लायक बनाते है क्योंकि मन के शांति से और कुछ, कोई नही चाहती। जिसी देश मे हम रहते है उसी देश की प्रमुख पात्रों है संस्कारी नारी। मरने के वक्त मे भी अपने मान - सम्मान को छोड़नेह को कोई स्त्री तैयार नही होगी। इन सब सगुणों को आगे बढ़ाने मे हम सब जागृता पड़नी चाहिए क्योंकि जीने के वर्षों को कोई नही याद करती लेकिन जीने की प्रकार ही सभी लोग अनुपम समझते है। हमारी देश उन देशो मे से है जिनमें लोग आधिक से अपने मूल्यों को आगे लानी चाहते है। श्री नारायण गुरु, बोधी धर्मन जैसे महापुरुषों का जन्मभूमी है भारत। इन्हीं पुण्यात्माओं की प्रार्थना ही हमें व्याकुलता और संघट से सहारा देते है और मुक्त करते है।

लेकिन आधुनिकता प्रकाश के किरणों से अधिक वेगता मेंह आगे चल चुकी हूँ।

जिसका बुरा और अच्छी असर हम को ही सहना पड़ती है। मानव के सहायता के लिए बनी मशीनों मानव को अपने गुलाम कर चुकी है। गुलामी की स्थिति सच में बहुत बुरी।

आधुनिकता को कई बहतर और बेहिसाब असर होती है। जिनमें से एक है पाठ्य क्षेत्र में अधिक विवरण और ज्ञान के प्राप्ती। क्योंकि आज की जमाना आधुनिकता को ही मुख्य स्थान देती है। पूरी संसार के समाचार एक क्षण में प्राप्त होती है। वैज्ञानिकों के साविश्कारों ने चिकित्सा, पाठ्य, जल-वायु जहाज आदि के क्षेत्रों पर अधिकार जीत लिया है।

आधुनिकता के बढ़ावा के कारण हमारी संसार और ताकतवार और प्रगल्भ हो चुकी है। हमारी मानव चाँद में भी अपने पैरों रख दिया है। आधुनिकता के इस अविस्मरणीय और नैमिशिक प्रागति ने अनेक बुरा असर भी छोड़ दिया है और इस आधुनिकता की काले बादल

Code No : 20

हमारी देश और संसार दोनों के ऊपर पड़ गई हूँ। जिसका मूल हमे ही चुकाना पड़ेगा। पुराने जमाने मे आधुनिकता के बढावा के कारण ही सिनेमा थियेटरों ने समाज मे स्थान लिया है। शादी महल, पार्क, खेल मैदान और शादी महल जैसे स्थानो पर लोगो का सार्वजानिक मिलन होते थे। मानव में आपसी संबंध जगाने मे इन सार्वजनिक स्थानो ने महत्वपूर्ण भूमिका लिया है। लेकिन इसी सिनेमा थियेटरों पर पुराने लोगो आपस मे मिलते थे और अपने एकता को अपने आप पर जुड़ाते थे। लेकिन आज मानव औद्योगीकरण के कारण से, स्वार्थता से प्रेरित होकर ऐसी सार्वजनिक संगम स्थानों पर हस्ताक्षेप करते है। पार्क खेल - मैदान आदि को उखाड़कर उसकी जगह मे बड़ी होट्टेल, मकानों, आदि बनाते है। जिसका बुरा असर मानव को ही चुकाना पड़ेगा।

Code No. 20

किसी ने कहा है कि अपने दुष्कर्मों का फल अपने आप को ही सहना पड़ेगा। लोग अपने पुराने संस्कार को छोड़कर उसके महत्व को भूलकर अपने धार्मिक परंपरा के विरुद्ध खड़े हुए है। ~~जिसका~~ उन लोगों के आँखें आधुनिकता के काले हाथो से बँधा हुई है। ऐसी स्वार्थता पूर्वक कर्मों करने में लोग मे कोई दिक्कत नही दिख आती है। अपने प्रकृति को प्रदूषित करने मे उन्हे को अपमान बोध आते। उनको यह बात केवल एक मनोरंजन है। लेकिन बात के आग बढ़ने मे बातो ~~हाथ~~ हाथ से बिगड़ जाती है। एक प्रत्येक सीमा आने पर इस क्रूर कर्मों का बुरा असर हम पर आक्रमण करेगा। जिसके रोकथाम के लिए हमारे पास और कोई रास्ता नही होगी। हमारी देश के उन्नाति के लिए अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना अनिवार्य है।

Code No : 20

पुराने जमाने में हमारे पुर्वजों अपनी पर्यावरण को स्वच्छ रखने में कोई दिक्कत नही करते थे। क्योंकि वे लोग जानते थे कि स्वच्छता के संरक्षण न करने पर किन-किन बुरी प्रभावो उनपर पड़ेगी। लेकिन आज लोग कचड़ा को सार्वजनिक स्थानों निक्षेपित करते है। यह हमारी गाँधी जी तत्व का विरुद्ध है। उन्होंने कहा है स्वच्छता आध्यात्मिकता का एक पर्याय है।

लोग पुराने जमाने में अपनी व्यक्ति, बंधन और परिवार की एकता को आगे बढने पर व्यस्त थे। वे अपने परिवारवालों के लिए जीते थे, और अपनी परिवार ही उनकी निगम में सर्वेश है। उनको अपने परिवारवालो के साथ समय बिताने में अधिक सा तात्पर्य थे। लेकिन आज की मोबैल आदी आधुनिक सुविधाएँ के चक्रव्यूह में रहना ही वठ लोग चाहते है। वे अपनी प्यारी सी बंधनों को

आगे बढ़ाने में नही बल्कि इंटरनेट के मायाजाल में बसना चाहता है। इंटरनेट की इस मांत्रिक चाल के वजह से लोग आधुनिक सुविधाओं के साथ समय बिताना चाहते है। आधुनिक सुविधाएँ ही उनके लिए सब कुछ मानते है। परिवार और मानव के बीच का गहरी टकराहट लाने में प्रधान भुमिका आधुनिकता ने लिया है।

भारतीय परंपरा के अनुसार लोग दूसरो के दुख में सहानुभूति दिखाना ही नही बल्कि उनके दुख में भाग लेने को भी तैयार थे। लेकिन आज आधुनिकता के अधिक प्रचार में मोबैल नीच रखकर उन्हे कोई धार्मिक कर्म करने को वक्त नही है। वे सभी समय व्यस्त है। अपने धार्मिक अवबोधन और परंपरा का बलिदान करते है। इसीलिए हम कह

सकते है कि परंपरा और आधुनिकता के बीच में बाहरी टकराहट उभर आती है। भारतीय का मन सभी समय ~~प्रज्वलित~~ है। वे पुराने जमाने का पूर्वजो धार्मिक अनुशासन एंव परंपरा का संरक्षण के लिए किसी भी हद तक चलने को तैयार थे। उनके लिए अपनी आपसी विश्वास ही सबकुछ है। हमारी परंपरा को भूलकर प्रवार्ति करना नही चाहिए क्योंकि हमारी परंपरा ही हमारी चैतन्य है। हमारी संस्कार ही हमारी तनिमा और विशेषता है।

आज के युग मे सबसे बड़ी समस्या है स्त्री की वस्त्रधारण। धर्मग्रंथो सदा समय स्त्री का आदर करने को सिखाते है। लेकिन जिस तरह आज की स्त्रीगण व्यवहार करते है उसे देख लो तो अपमान से हम अपना सिर तक नही उठा पाएगी। ~~क्योंकि~~

हमारी पुण्य ग्रंथों और चरित्र का सही परिशोधन करने में हमे समझ आएगी की उसी पीढ़ी की ~~स्त्री~~ स्त्रीजन देवियों के समान थे। उनकी वस्त्रधारण किसी को भी उनपर बुरा व्यवहार करने को प्रेरणा नही देती। लेकिन आज के जमाने मे स्त्री के ~~ऊपर~~ और उभर आनेवाली हत्याचारो एवं भ्रष्टाचारों को देखो तो उन सभ पर स्त्री की गलत वस्त्रधारण मुख्य भूमिका लिया है। हम उस देश में रहते है जिसमें पद्मावती जैसी संस्कारी ~~नारी~~ नारियों जीकर सिखाया है। जिन्होंने अपने मान-सम्मान के सुरक्षा के लिए अपने आप को ही जला दिया है। शनी पद्मावती की उद्देश्य शुद्धि, ~~धर्म~~ धर्म बोध, मान-सम्मान का विचार एवं अच्छी व्यवहार आधुनिकता के नारियों के लिए उत्तम मातृका है। जिसका मूल्यो को हृदय तक जुड़कर रखना चाहिए। वैसे ही स्त्रीजनो पूरी समाज का मातृका बनना

चाहिए।

हमारी इस पीढ़ी हमारी धार्मिक परंपरा एवं आधुनिकता के बीच गहरा टकराहट लाया है। हमें अपने परंपरा को नष्ट नहीं करना चाहिए। क्योंकि भारतीय संस्कृति की एकता अद्वितीय है। हमारी सांस्कृतिक, सामूहिक, विद्यार्थी जीवन, आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए अपनी संस्कार एवं परंपरा हमारे लिए सहायक बनेगी। क्योंकि हमारी परंपरा ही हमारी महिमा की हेतु है। उनका संरक्षण हमारी दायित्व है। इसलिए परंपरा और आधुनिकता के बीच का टकराहट को हटाना और सुधारना हमारी कर्तव्य है। उससे पीछे हटकर भागना एक अभिशाप है। स्वतंत्रता की इस 71 साल में हमें यही यज्ञ लेना है अपने परंपरा का सुरक्षा करें। जय हिन्द !!